सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 147

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई ाक : 34-35
जून : 2016

## ।। ॐ श्री साईनाथाय नमः।।
## ।। ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः।।

### आरती साधना का महत्त्व
### कफ–वात–पित्त

**Publisher**
**Sri Saikalp Adhyatm Sanstha**
**"Sai Niketan"**
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

**Patron**
Anand Bapshet

**Editorial**
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

**Subscription**
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

**Overseas**
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

**Printed By**
Soni Printers
Cell : 09718657567

**Published Every Month**
©All rights reserved with Publisher

**गुरूबंधुभगिनियों से**

भगवद भक्ति करते समय कृपाप्राप्ति हो इसलिए हम कौन कौन से साधनों को अंगीकार करते है पूजाअर्चना, जाप, होमहवन,वृत, उपवास इत्यादि। परन्तु इन साधनों में सबसे श्रेष्ठ साधन भजन है। परम पूज्य पंत महाराज जी ने उनके चरित्र में बताया है कि भजन और भोजन ये मोक्ष के साधन है। दिन में दो बार यथायोग्य खाना खाने के बाद हमें उस खाने से समाधान प्राप्त होता है और डकार आती है। परन्तु अगर उसके बजाए सुबह से शाम तक घोड़े के खाने जैसे अनियमित ढंग से दिन भर खाते रहे तो उस खाने से डकार नहीं आती। इसलिए भजन को भोजन कहा है।

अब अपने घर में आरती करना और हफ्ते 2–3 बार कार्यकेंद्र पर आकर यहाँ हो रही आरती में शामिल होना इनमें अंतर है आरतियाँ वही है परन्तु इनमें दो अंतर है–

1) आरती मायने आर्तता (मूल शब्द 'आर्त' – तीव्र इच्छा, उत्कट इच्छा, तीव्र आकांक्षा, तड़प, व्याकुलता, विव्हल, उत्कंठा, जब अंर्तमन से भगवान को मिलने की, प्राप्त करने की तीव्र इच्छा निर्माण होती है तब इस शब्द का उपयोग करते है जैसे भीमसेन जोशी का राग है पिया मिलन की आस, भगवान के कृपाशीर्वाद को आत्मा के अन्दर महसूस करना, लीन होना– गुरुकृपा की पात्रता का अनुभव करना इत्यादि) – आप घर में आरती करते हो परन्तु वहाँ आपको प्रसन्न करने की आर्तता नहीं होती इसलिए घर में की हुई आरती सूखी होती है। कार्यकेंद्र के नियुक्त सेवक की आरती करने में आर्तता होती है गीलापन होता है, इसलिए घर की आरती में जो विषय साकार करना होता है वह नहीं होता यानी गीलापन। क्योंकि घर में आपको अपनी समस्याओं की पूर्तता की जल्दी होती है कि यह होगा कि नहीं वह होगा कि नहीं इत्यादि।

2) इस संबंध में दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कार्यकेंद्र पर हम सामूहिक आरती करने की विधि करते है। घर की आरती में ज्यादा से ज्यादा दो-तीन आदमी होते है और उनके साथ अपेक्षा का वलय होता है इसलिए एक घंटे की सेवा में सिर्फ 5 मिनट की सेवा का ही लाभ होता है 55 मिनट की सेवा बेकार जाती है। क्योंकि वह अनावश्यक अपेक्षा वलय आपने खुद ने धारण किया होता है इसके कारण 60 मिनट की सेवा की उतराई (प्रतिसाद) के लिए आपको केवल 5 मिनट मिलते है और आपके 55 मिनट व्यर्थ जाते हैं।

कार्यकेंद्र पर सामूहिक आरती में एक व्यक्ति की बाजु में दूसरा व्यक्ति इस तरह से कतार में आरती के लिए बैठते है। ऐसे समय वहाँ उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति में उसके जीवन के पूर्वकर्मपरत्वे के दोष प्रतिकूल रूप में कम अधिक प्रमाण में धारण हुए होते है और वे आरती के समय कार्यकेंद्र पर उपस्थित होते है। परन्तु आरती में आगे आसन पर बैठा नियुक्त सेवक कार्यकेंद्र पर उपस्थित व्यक्तियों को खुद से जोड़कर उन्हें श्री गुरु के स्तरपर ले जाने के लिए प्रथमतः 'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः' बोलकर श्रीगुरु को आवाज देता है। तब कार्यकेंद्र पर उपस्थित आप सब लोग जो प्रतिकूल दोष धारण करके आए हुए हो वे आपके सारे दोष आपसे दूर हो जाते है और आप सब श्री गुरु के स्तर पर जाकर कार्यकेंद्र की आरती का लाभ प्राप्त करते हो। यह सब तभी होता है जब आप कार्यकेंद्र पर सामूहिक आरती में बैठते हो।

घर में आरती करते समय अगर आप तीन ही व्यक्ति आरती करने बैठे हो और बीच में बैठा व्यक्ति यानी गुरुभक्त या आपका गुरुबंधु अपने 100% प्रतिकूल कर्म धारण करके आपके पास बैठा है। आपका वलय उतना प्रखर नहीं है परन्तु वह व्यक्ति आपके सानिध्य में आया तो आपका वलय उस व्यक्ति के वलय को अपने स्तर पर लाने का प्रयत्न करता है। मतलब आपने अपने घर में सालोसाल उपासना करके भी ऋणानुबंधपरत्वे आए दोष तथा उन दोषों की प्रखरता आपसे विभक्त नहीं होती है। परन्तु आप सामूहिक आरती में या सामूहिक पारायण में बैठने के बाद आपने सेवा ना करके भी आपके आसपास बैठे अन्य लोगों में जो विकसित अवस्था का भाग है वह आपको प्राप्त होकर उससे आपके दोषों में से 75% दोषों का निवारण होता है। इसीलिए सामूहिक प्रार्थना का सामर्थ्य इतना बड़ा है।

सामूहिक प्रार्थना के सामर्थ्य की मिसाल यह है – 1940 में जब महायुद्ध शुरू हुआ तब पश्चिमात्य देशों में इंग्लैंड की उस युद्ध के लिए कोई तैयारी नहीं थी। उस समय उनके पास प्रार्थना करने के सिवाय अन्य कोई मार्ग नहीं था तो इंग्लैंड के सभी लोग उस समय सुबह, दोपहर, शाम चर्च में जाकर विश्वशांति हो इसलिए प्रार्थना करते रहे जिसके कारण उस महायुद्ध का अंत हुआ? तो जिस हिटलर ने यूरोप, इंग्लैंड, इत्यादि सब जीतने का विचार किया था वह हिटलर नामशेष हुआ और जगत में शांतता निर्माण हुई। इसका अर्थ यह है कि हिटलर जैसे हिंसक प्रवृत्ति के इन्सान के पास अणुबॉम्ब जैसे विनाशक साधन होते हुए भी इंग्लैंड के प्रार्थना करने वाले लोगों ने अपनी प्रार्थना से हिटलर का वह अणुबॉम्ब खा डाला मतलब प्रार्थना से विनाश को रोका।

आज आपको भी इसी प्रकार की तैयारी करनी पड़ रही है क्योंकि आपके जीवन में आपके चारों ओर का कर्म आपके लिए हिटलर जैसा ही है मतलब आपका दुश्मन है। उस कर्म को आपको पराजित करना है या शरण आने के लिए मजबूर करना है। इसके लिए अगर आपके इस माध्यम में सात्विक और शुद्ध प्रार्थना का प्रभाव होगा तो आपके जीवन में प्रवाहित होने वाले कर्मों का कार्यकारणभाव या विषय कुछ भी होगा तो भी अपनी सात्विक और शुद्ध प्रार्थना के बल पर (सामर्थ्य से) आप उस कर्म को टाल सकते हो या वह कर्म आपके लिए अनुकूल हो सकता है यानी आपका मित्र बन सकता है।

केवल सामूहिक आरती में ये सब सम्मिलित है। मतलब आपको अपना जीवन विकसित करने के लिए तथा अनुकूल करने के लिए यह कितनी आसान साधना है! ऐसी यह साधना आप भक्तभाविक योग्य प्रकार से कर सके और यह कार्य सबके लिए लाभदायक हो इसलिए मैंने जगहजगह कार्यकेंद्र स्थापित किए है। उनके किराए का अंशमात्र भी बोझा आप भक्तभाविकों पर नहीं डाला है फिर भी आप ये बहाने बनाते हो कि हम अपने घर में ही आरती करते है क्योंकि कार्यकेंद्र घर से दूर है और वहाँ ट्रेन या बस से आनेजाने में किराया खर्च होता है।

सामूहिक आरती में दूसरा महत्वपूर्ण शास्त्रीय कारण इस प्रकार है – आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति की देह प्रकृति में कफ, पित्त और वात ये तीन गुणधर्म होते है। उसके अनुसार किसी व्यक्ति की कफ प्रकृति होती है, किसी की वात प्रकृति तो किसी की पित्त प्रकृति होती है। व्यक्ति की जो प्रकृति होती है वह गुणधर्म उसमें प्रखर होता है और अन्य दो कम प्रमाण में होते है, जैसे कि कफ प्रकृति के व्यक्ति में कफ गुणधर्म प्रखर होता है और वात और पित्त गुणधर्म कम प्रमाण में होते है। यही वात और पित्त प्रकृति के व्यक्ति के बारे में होता है। इसके कारण प्रत्येक व्यक्ति के प्रकृति स्वास्थ्य में कुछ दोष भी होते हैं। तो सामूहिक आरती में क्या होता है? कफ, पित्त, वात इन गुणधर्मों की कम अधिकता के कारण व्यक्ति के प्राकृतिक स्वास्थ्य में जो दोष होते है उन दोषों का निवारण होता है। इसका आधार इस प्रकार है–

शास्त्रीय संगीत की नींव 'राग व रागिनी' पर आधारित है और इस राग व रागिनी में कफ, पित्त, वात ये गुणधर्म होते है। जैसे कि 'मालकंस' यह राग 'कफ' प्रकृति का राग है। जब किसी महफिल में यह राग गाया जाता है तब सुनने वालों में कफ प्रकृति के लोगों को वह राग अच्छा लगता है और वे लोग गायक की प्रशंसा करते है और अन्य लोग सो जाते है। मतलब मालकंस राग की प्रकृति के यानी कफ प्रकृति के गुणधर्म जिन व्यक्तियों में होते है उन्हें मालकंस राग सुनना अपिलिंग होता है, अच्छा लगता है परन्तु जिन व्यक्तियों में कफ प्रकृति के गुणधर्म नहीं है वे मालकंस राग सुनते समय झपकियाँ लेते है यह हमें दिखाई देता है। यह बात संगीत के सभी राग व रागिनीयों के बारे में है। संगीत का कोई भी राग श्रोताओं को समान प्रमाण में अपिलिंग नहीं होता है, यह बात होती है ना? वास्तव में कोई भी राग सुनते समय

वह संगीत ही होने के कारण सुनने वाले सभी लोगों को समान प्रमाण में उसकी दावत होनी चाहिए, परन्तु वैसा नहीं होता है। मतलब एक ही राग सुनने वाले सारे श्रोता उस राग का सेवन समान प्रमाण में नहीं कर सकते। तो उनकी कफ. -वात-पित्त इनमें से जो कोई प्रकृति होती है उस प्रकृति का राग सुनते समय ही वे उसमें समरस होते है। मतलब उस राग में कफ-वात-पित्त इनमें से जो कोई गुणधर्म होगा उस गुणधर्म कें लोगों को ही वह राग सुनना अपिलिंग होता है, अच्छा लगता है।

संगीत के रागों के विषय के बारे में यह जानकारी मुझे नागपुर में मिली। मैं जब नागपुर के अपने कार्यकेंद्र पर गया था तब वहाँ नागपुर के विश्वविद्यालय में संगीत विषय लेकर बी.ए. तथा एम.ए. करने वाले विद्यार्थीयों को पढ़ाने वाले प्राध्यापक आए थे। अपने विषय से संबंधित जो प्रश्न मुझे पूछने थे उसके लिए उन्होंने आरती के बाद मुझे उनके घर आमंत्रित किया। इसके अनुसार जब मैं उनके घर गया तब वहाँ उस संगीत विषय पर चर्चा हुई। उस समय उन्होंने मुझे पूछा, ''आपके कार्यकेंद्र पर गाई जाने वाली आरतियाँ साधक की दृष्टि से इतनी उपयुक्त है तथा इतनी विचारपूर्वक ली गई है तो इन आरतियों की धुन किसने बनाई है? और आपने किनसे संगीत सीखा है?'' मैंने जवाब दिया, ''मुझे संगीत का ज्ञान नहीं था और मैंने संगीत सीखा भी नहीं है। मुझे बचपन से ही संगीत सुनना पसंद था और बाकी सब परम पूज्य साईबाबा का कृपाप्रसाद है।''

अपने कार्यकेंद्र पर जो आरतियाँ हम गाते है उनकी धुन मैंने इस तरह से बनाई है– पूना के द्वारकामाई से परम पूज्य पंतमहाराजजी के बालेकुंद्री तीर्थक्षेत्र जाने के लिए मैं गाड़ी में बैठता था। हाथ में श्री दत्तप्रेमलहरी यह परम पूज्य पंतमहाराजजी ने लिखे पदों की किताब लेकर उसके पन्ने पलटते समय जो पद मन को अच्छा लगेगा उसकी धुन गाड़ी में बैठेबैठे बनाता था। फिर बालेकुंद्री पहुँचने के बाद वे आरतियाँ परम पूज्य पंतमहाराजजी को सुनाकर उसके लिए उनसे स्वीकृति लेता था, ऐसी घटना इन आरतियों की है। मतलब इन आरतियों की धुन बनाने के लिए खुद को कमरे में बंद करके ताल पकड़कर हार्मोनियम के सुर के साथ आरती की धुन बनाना ऐसा मैंनें कभी नहीं किया है। आप कहते हो कि मन एकाग्र नहीं होता है तो फिर गाड़ी चलते समय गाड़ी की खड़खड आवाज तो सुनाई देती है, परन्तु पूना के द्वारकामाई से निकलकर बालेकुंद्री पहुँचने तक रास्ते में मैंने आरतियों की धुन बनाई है और फिर उसी दिन वे आरतियाँ परम पूज्य पंतमहाराजजी को सुनाकर उनसे स्वीकृति ली है। ऐसी सारी आरतियाँ है मतलब मैंने वैसे संगीत सीखा नहीं है।

मेरी बात सुनकर संगीत सीखाने वाले प्रोफेसर ने कहा, ''संगीत में यह जो तत्व होता है उसके बारे में क्या आपने अपने भक्तों को पूछा है?'' मैंने उन्हें पूछा ''क्या तत्व है?'' यह पूछने पर प्रोफेसर ने बताया, ''देखिए हम कार्यकेंद्र पर एक घंटा आरती करते है जैसे कि 'दत्ता दया करी' इस आरती से शुरूआत करने के बाद आखिर में 'पाही रे दत्ता पडलो तुझ्या चरणी' यह भैरवी राग की आरती गाते हैं। ये सात सुरों की जो 10–12 आरतियाँ है उनमें प्रत्येक आरती में सर्व भक्त एकाग्र नहीं होते है। प्रत्येक भक्त का सात्विक देहभाव इन 10–12 आरतियों में से कुछ गिनी चुनी 2–4 आरतियों में भाव विभोर होता है यानी खिल उठता है और वह भी इतना कि तब उनकी आँखे भर आती है। ये गिनी चुनी 2–4 आरतियाँ प्रत्येक भक्त के लिए अलग-अलग होती है। मतलब इस आरती के लाभ का सब भक्तों को समान बटवारा होना चाहिए परन्तु प्रत्येक भक्त की प्रकृति कफ-वात-पित्त इनमें से अलगअलग गुणधर्मपरत्वे धारण हुई होती है। इसलिए कफ-वात-पित्त इनके अनुसार संगीत के अलगअलग रागरागिनी में बनाई गई प्रत्येक आरती यदि श्री गुरु दत्तात्रयजी को संबोधित करने वाली है तो भी उस आरती के लिए बनाई धुन में कफ-वात-पित्त इनमें से जो गुणधर्म अंतर्भूत होता है उस गुणधर्म को भक्त का देहिक माध्यम आरती के रूप से धारण करता है।''

''आपकी आरती की रचना में यह योजना है कि आपके समस्त भक्तगण आरती के लिए बैठने के बाद जब आप वहाँ आरती करते है तब 'गुरुकृपाशीर्वाद' से आज आपकी (वंदनीय दादाजी की) जो प्रगति इस गुरुमार्ग में हुई है वह प्रगति आपके भक्तगणों की भी हो। यह जो योजना इस आरती माध्यम में अंतर्भूत है उसके अनुसार आप 'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः' कहकर (उस स्तर पर आपके) भक्तों में कफ-वात-पित्त इन तीन गुणधर्मों में से जो कमी होगी उस कमी की पूर्तता करते है और कफ-वात-पित्त इन तीनों तत्वों को समान रूप में आरती से यह तत्व जोड़ देते है। मैं इसी विषय पर संगीत में पी.एच.डी. कर रहा हूँ और ऐसे समय मुझे आशीर्वाद देने के लिए श्री परमेश्वर ने आपको (वंदनीय दादाजी को) यहाँ नागपुर भेजा है।'' इसका अर्थ यह है कि प्रोफेसर ने कही बातों के अनुसार आरती यह साधन कितना महत्वपूर्ण है परन्तु आप भक्तगण इसे मामूली समझते हो।

प्रोफेसर ने आगे बताया, ''फिलहाल संगीत शास्त्र पर मेरे जो दो प्रयोग चल रहे है वे इस प्रकार है – हम नित्य अन्न सेवन करते है उस अन्न की तरह संगीत यह भी एक पूरक अन्न ही है। हम गा नहीं सकते इसलिए हम संगीत का महत्व समझ नहीं पाते है परन्तु आजकल के इन बच्चों की ओर देखिए। इनमें से जिन्हें संगीत का ज्ञान है उन बच्चों को पढ़ाई करते समय एकाग्र होने के लिए रेडियो की जरूरत होती है, क्यों?तो उनमें पढ़ाई में एकाग्र होने के लिए कमी है और उस कमी की पूर्तता करने के लिए संगीत उनकी इस तरह सहायता करता है कि संगीत के 7 स्वरों में से कोई एक स्वर उनके कानों में ध्वनित होते ही वह उनके कोषों तक जाकर उनका मन एकाग्र करता है।

प्रोफेसर का दूसरा प्रयोग यह था कि उन्होनें फूलों के पौधों के गमले रखे थे। दो गमले उन्होनें छाया में यानी जहाँ प्रत्यक्ष (direct) सूर्य का प्रकाश नहीं आएगा परन्तु खिड़की खोलने के बाद जहाँ उजाला होगा ऐसी जगह रखे थे और उतने ही प्रकाश से उन पौधों का कितना पोषण होता है इसका वे अध्ययन कर रहे थे। फूलों के पौधों के दो गमले उन्होनें प्रत्यक्ष सूर्यप्रकाश में रखे थे और उन पौधों का कितना पोषण होता है इसका अध्ययन वे कर रहे थे। प्रोफेसर ने और दो फूलों के गमले उस जगह रखे थे जहाँ वे सुबह संगीत का रियाज करते थे और संगीत सुनने से पौधों को कितना पोषण मिलता है इसका भी अध्ययन वे कर रहे थे।

प्रोफेसर ने अपने ऊपर बताए प्रयोग के बारे मे बताया कि, एक ही जाति के पौधों को समान खाद और जल देकर उन्हें तीन अलगअलग वातावरण में रखने के बाद प्रयोग का निष्कर्ष इस प्रकार था– अप्रत्यक्ष (indirect) सूर्यप्रकाश में रखे गए पौधों पर एक ही फूल खिला, प्रत्यक्ष सूर्यप्रकाश में रखे पौधों पर तीन फूल खिले तो संगीतमय वातावरण में जो पौधे थे उनपर 10 फूल खिले थे क्योंकि उन्हें संगीत यह नित्य टॉनिक मिल रहा था। इससे हम यह कह सकेंगे कि उन पौधों के लिए संगीत का वातावरण अधिक श्रेष्ठ साबित हुआ मतलब उन पौधों को संगीत रूप में अन्न प्राप्त होने के कारण उनपर ज्यादा फूल खिले ।

वेदोक्त उपासना भी संगीत ही है। अभी हम सब जब तीर्थक्षेत्र नरसोबावाडी गए थे तब वहाँ के पंडित रूद्र की संथा कह रहे थे उस समय उनकी ध्वनि संगीत ही निमार्ण कर रही थी और वह भी संथा पद्धति से व वेदोक्त पद्धति से। पंडितों ने कहे रूद्र की संथा में देवदेवताओं के नाम का तथा गुणवर्णन का उद्देश्य होता है और यहाँ वही उद्देश्य अपनी आरतियों में होता है।

यह सब आपको बताने का उद्देश्य यह है कि अपनी इस कार्यपद्धति में जिस आरती माध्यम द्वारा आप सेवा करते हो वह सबसे श्रेष्ठ साधन है। यह सर्वश्रेष्ठ साधन श्री सद्गुरु ने आप भक्तों के कल्याणार्थ मेरे माध्यम द्वारा आपको प्राप्त कर दिया है और वह भी मुझे संगीत का कोई ज्ञान ना होते हुए भी। मतलब स्वरताललय इनके बारे में भी मुझे बाद में मालूम हुआ यानी उस समय मुझे उसका ज्ञान नहीं था। इसलिए इस आरती में जो देवत्व है वह आपकी ईश्वर की मूर्तियों में नहीं है, फोटो में नहीं है, आपकी मन्नतों में नहीं है या आपकी नित्य उपासना में भी नहीं है। ऐसे दिव्य साधन का लाभ आपको अहर्निश (सुबह, शाम) प्राप्त हो इसलिए अलगअलग जगह कार्यकेंद्र स्थापित किए गए है। फिर भी इन कार्यकेंद्र पर दिनभर के 24 घंटो में से केवल आधा या एक घंटा उपस्थित रहने का कर्तव्य आप आलस्य के कारण तथा आपको इस आरती के बारे में आस्था ना होने के कारण निभाते नहीं हो और आरती इस साधन को दुर्लक्षित करते हो।

आप इस आरती साधन को दुर्लक्षित करके घर में अन्य साधनों का फैलाव निर्माण करते हो और क्या इन साधनों द्वारा हम कृपाशीर्वाद के पात्र हो सकेंगे?इसका विचार करके वैसी योजना बनाते हो। परन्तु आपके घर में की गई आराधना सफल होने के लिए आपको सिद्ध करने वाला माध्यम आरती है। आपके घर में पूजनअर्चनादि विधि में जो ईष्ट देवता की मूर्ति या फोटो है उनसे आप 'कृपाशीर्वाद' कब प्राप्त कर पाओगे? तो आपने अपने कार्यकेंद्र पर हो रही सामूहिक आरती का लाभ लेने के बाद। आपके घर की देवदेवताओं से निर्माण हुई लहरें तथा प्रकाश वे देवदेवता उनका 'कृपाप्रसाद' करके आपके देह में कब प्रकाशित करेगी? तो आपका देहिक माध्यम आरती में सिद्ध हुआ होगा तो उसके बाद। आपके घर के देवदेवताओं से निर्माण हुई लहरें तथा प्रकाश वे देवदेवता उनका 'कृपाप्रसाद' करके आपके देह में कब प्रकाशित करेगी? तो आपका देहिक माध्यम आरती में सिद्ध हुआ होगा।

यह सब जो आपको बताया है इसका अर्थ क्या है? तो गुरुमार्ग में या संस्था के इस कार्य में केवल आपके जीवन की अड़चने तथा समस्याओं के प्रश्न हल करने का ही कार्य इस संस्था ने अंगीकृत नहीं किया है। संस्था के कुल कार्य की जाँच की तो इस समिति को कौनकौनसे कार्य की जिम्मेदारी निभानी है? तो –

1) धर्म का पुनरूज्जीवन करना।
2) कर्म बंधन से आपकी मुक्तता करना।
3) आपके प्राप्त जन्म का सार्थक करना।
4) आपके प्राप्त जन्म का आपको यथार्थ ज्ञान कराना।
5) आप इतनी अवस्थाओं से जाने के बाद जिस तरह आप यहाँ अपने जीवन की समस्याओं के प्रश्न हल करने के लिए आए थे उस तरह आपने अब औरों के जीवन की समस्याओं के प्रश्न हल करने है और आप यकीन से कर सकेंगे यह मेरा दृढ़ विश्वास है। (वंदनीय दादाजी जी का) जब मुझसे लेकर दूसरों को बाँटोगे तब इस प्रकार श्री साई शब्द की एक माला बन जायेगी, पिंड से ब्रह्माण तक जोकि दुनिया को अपने में समा लेगी यही प.पू. बाबा-दादा और विभूतियों का वचन है।

शुभं भवतु

जनम जनम का सेवक